International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(6): 69-70

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(6): 69-70
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 13-09-2018
Accepted: 14-10-2018

डॉ. लता देवी
सहायक आचार्य, संस्कृत–विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
शिमला

Correspondence
डॉ. लता देवी
सहायक आचार्य, संस्कृत–विभाग,
हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय,
शिमला

विद्योत्तमा नाटक में प्रकृति–चित्रण

डॉ. लता देवी

प्रस्तावना

मानव का प्रकृति के साथ सम्बन्ध प्राचीनकाल से ही रहा है। अतः मनुष्य और प्रकृति का परस्पर अटूट सम्बन्ध है। वह प्रकृति की गोद में अठखेलियाँ करता हुआ शान्ति, सन्तोष और सुख का अनुभव करता है। जब मनुष्य इस धरा पर आया तो उसने स्वयं को प्रकृति से घिरा पाया। 'विद्योत्तमा नाटक' में पण्डित विष्णुदत्त त्रिपाठी ने जो प्रकृति का वर्णन किया है, वह अत्यन्त रोचक, यथार्थ एवं व्यापक है। प्रकृति के प्रति उनके मन में असीम अनुराग है, उन्होंने प्रकृति को निकट से देखा है और उसके साथ आत्मीयता का सम्बन्ध स्थापित किया है, उन्होंने पर्वत, नदी, सरोवर, ऋतुएं, पक्षियों तथा वायु, आकाश, पुष्पों, वृक्षों इत्यादि का वर्णन करके प्रकृति को बड़े मौलिक रूप से समर्थ शब्दों में बाँधा है।

प्रथम अंक के एक श्लोक में प्रकृति का सुन्दर वर्णन किया गया है। यहाँ कोकिल मधुर अव्यक्त शब्द कर रहा है। रसाल (आम्र) पुष्पों पर भ्रमर गुंजार कर रहे हैं। वसन्त ऋतु में वायु विग्रह धारण कर मदोन्मत्त की भाँति मन्दगति से प्रवाहित हो रहा है।[1] कोकिल का मधुर शब्द, भ्रमर गुंजार और वायु का मन्द गति से बहना उद्दीपन विभाव है। वसन्त ऋतु में वायु का विग्रह धारण करना अनुभाव है। एक अन्य श्लोक में नटी गाती है – सरोवर – तरंगों के संस्पर्श से शीतल हवा से समन्वित उद्यान–लताओं में दुर्ग की भाँति छिपे हुए शिशिर ऋतु पर वसन्त ने अपने मित्र सूर्य की शक्ति को पाकर धीरे–धीरे विजय प्राप्त की।[2]

उस समय आम के बाग लगाए जाते थे, जिन पर बौर आने के समय भ्रमर मधुर गुंजार करते थे। वसन्त ऋतु में मन्द सुगन्धित वायु बहती हुई मन को प्रसन्न करती थी। ऋतुराज वसन्त ने पर्दापण करके पहले से विद्यमान शरद् ऋतु को दूर कर दिया था। अतः वसन्त वातावरण को मनमोहक बना देता था।

चतुर्थ अंक में कवि ने एक श्लोक में प्रकृति का वर्णन दर्शाया है। पुरुषस्वरूप भगवान् विष्णु कब सेवनार्ह हैं? कानन को नूतन–नूतन कौन करता है? जल किससे शोभित होता है? आकाश में क्या शोभित होती है? यथाक्रम उत्तर है – सदा, वसन्त ऋतु, कमलों से और चन्द्रमा की कला।[3] वसन्त ऋतु आलम्बन विभाव है। चन्द्रमा की कला उद्दीपन विभाव है। पण्डितों का म्लान मुख अनुभाव है। ग्लानि, शंका आदि व्यभिचारी भाव है।

पंचम अंक में कवि ने प्रकृति का वर्णन अत्यन्त रोचक एवं व्यापक रूप से किया है। विद्योत्तमा आरती करते हुये विलाप करती है – हे ब्रह्ममाये! तुम्हारे कुटिलकर्मों को मैं जानती हूँ। विशाल वृक्ष में छोटा और अत्यन्त कृश लता में तुमने महान्, फल प्रदान किये हैं। अत्यन्त मधुर इक्षुदण्ड में कोई फल नहीं दिया है। हे विधिमाये! तुम्हारे कुटिल कर्मों को मैं जानती हूँ।[4] अग्रिम पंक्ति में विद्योत्तमा कहती है कि– हा कष्ट है। अत्यन्त सुगन्धित चन्दन – वृक्ष में तुमने फूल नहीं दिया और गन्धरहित पलाश–विटप में सुन्दर पुष्प प्रदान किया है[5], उस समय शोभा तथा उपयोग के लिए बागों में चन्दन के वृक्ष भी लगाए जाते थे। एक अन्य पंक्ति में विद्योत्तमा कहती है कि – जहाँ तुमने सुन्दर रत्न बनाये हैं, वही भयंकर विष है। जहाँ तुमने जीवनलतिका उत्पन्न की है, वहाँ हिमराशि विद्यमान है।[6] तात्कालिक परिवेश समृद्ध था। खानों–खदानों से रत्न आदि भी निकाले जाते थे। पर्वत सर्दियों में बर्फ से ढके होते थे। इस प्रकार प्राकृतिक परिदृश्य मनोहारी था।

पंचम अंक के एक श्लोक में कवि ने प्रकृति का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है – कुमुदिनी चन्द्रमा को, नलिनी सूर्य को और सुन्दरी – लता अपने कान्त श्रेष्ठ वृक्ष को देखकर विकास को प्राप्त होती है। जड़ मणि भी किरणों के कारण पिघलने लगता है।[7] जलाशयों में कुमुदिनी खिली होने से सुन्दर लगती थी। अग्रिम श्लोक में कालिदास कहता है – उत्तर दिशा में देवतास्वरूप, हिमालय नामक पर्वतों का राजा है जो पूर्व और पश्चिम समुद्र को व्याप्त कर पृथ्वी के मानदण्ड की तरह स्थित है।[7]

उत्तर दिशा में पूर्व से पश्चिम तक हिमालय की पर्वत श्रृंखला है। इसे पर्वतों का राजा भी कहा जाता है, इसके अतिरिक्त पूर्वी समुद्र तथा पश्चिमी समुद्र का वर्णन है।

एक अन्य श्लोक में कालिदास कहता है – वर्षकालपर्यन्त भोग्यार्ह प्रियतमा के दारूण विरहरूप स्वामी के शाप से तेजोहीन, अपने कर्त्तव्य से च्युत कोई यक्ष सीताजी के स्नान से पुण्य जल वाले, घने छायादार वृक्षों से युक्त, रामगिरि के आश्रम में निवास किया।[8] घने तथा छायादार नमेरु वृक्षों का उस समय अस्तित्व था। समीपवर्ती जलाशय पवित्र एवं स्वच्छ जलों से भरे होते थे।

निष्कर्ष

विष्णुदत्त के मन में प्रकृति के प्रति असीम अनुराग दृष्टिगोचर होता है, उन्होंने प्रकृति को अतिनिकट से देखा और उसके साथ आत्मीयता का सम्बन्ध स्थापित किया है, उन्हें प्रकृति का कोमल और रम्य रूप बहुत ही प्रिय है, उन्होंने प्रकृति को बड़े मौलिक रूप से समर्थ शब्दों में बाँधा है।

सन्दर्भ–सूची

1. विद्योत्तमा, 1.2
2. वही, 1.3
3. वही, 4.1
4. वही, 5, पृष्ठ, 49
5. वही, 5, पृष्ठ, 49
6. वही, 5, पृष्ठ, 50
7. कुमारसम्भवम, 1.1
8. मेघदूत, पूर्वभाग, श्लोक 1